



डॉ. अर्जुन चव्हाण,

एम.ए., बी.एड., पीएच. डी.

प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

: संस्तुति :

मैं संस्तुति करता हूँ कि सुश्री. संगीता राजाराम नाईक का 'रिघतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन' लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।

तिथि : 29 जून 2000

अध्यक्ष

हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डॉ. के. पी. शहा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं
शोध-निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।

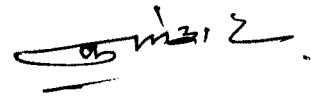
प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री नाईक संगीता राजाराम ने मेरे निर्देशन में “रिवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन” (“चिराग की लौ, अंधेरे का बेटा, न धर्म, न ईमान”) लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही और मौलिक हैं । प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

कोल्हापुर ।

तिथि : 29-6-2000

शोध-निर्देशक



(डॉ. के. पी. शहा)

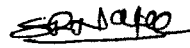
प्रख्यापन

‘रिवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन’ (“चिराग की लौ, अँधेरे का बेटा, न धर्म, न ईमान”) लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर।

तिथि : 29-6-2000

शोध-छात्रा



(सुश्री संगीता नाईक)